INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आंतरिक एवं बाह्य सज्जा में रंग संयोजन

डॉ. साधना चौहान
विभागाध्यक्ष (चित्रकला)
कुमारी मोनालिसा राजौरा (शोधार्थी)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविघालय, धार (म.प्र.)

प्रस्तावना :–रंग हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है, जितनी खुबसुरत हमारी यह रंगीन दुनिया है, उतनी ही विलक्षण इन रंगो की दुनिया है। बचपन में हमे सिर्फ तीन प्राथमिक रंगो के नाम सिखाये जाते है :– पीला, नीला और लाल, परन्तु सच तो यह है कि, किसी संख्या में रंगो को सीमित नही कर सकते। रंगो की कोई गिनती नही होती, क्योंकि इस दुनिया में असंख्य रंग है। इसका कारण यह है कि किन्ही भी दो रंगो को मिलाकर हम एक तीसरे रंग का निर्माण कर सकते है और उन दो रंगो की मात्रा में फेरबदल करके हम अनेक हल्के और गहरे रंगो का निर्माण कर सकते है। इस तरह हम अलग अलग सामंजस्य (Combinations) से असंख्य रंगो का निर्माण कर सकते है। रंग सुन्दरता की चरम विघा है और सुन्दरता का सीधा संबंध हृदय से है। यही रंग कला के भिन्न भिन्न रूपो में प्रयुक्त किऐ जाते है और कला की विभिन्न विघाओ में अलंकारिक, कलात्मक व सांकेतिक आधार पर उपयोग में लाऐ जाते है। जैसे '' बैगा स्त्रीयॉ अपने शरीर पर गोदना गुदवाती है, जो स्वयं कई चिन्हो से मिलकर बनी एक संश्रृष्ट संरचना होती है '' 2 इसमें मुख्यतः हरे रंग का प्रयोग पाया जाता है, जो महज शरीर का सौन्दर्य ही नही बढाते वरन् उसमें तमाम तरह की विपदाओ से प्रतिरोध करने की क्षमता को भी बढाते है, जैसे हाथो व पैरो की शक्ति को बढाते है, ऐसी बैगाओ में मान्यता है। गोदना आदिवासियों का आभूषण माना जाता है, विशेषकर महिलाऐ अपने शरीर में तरह तरह की आकृतियॉ गुदवाती है। इन आकृतियों का अपना धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व होता है।

धार्मिक :–भारतीय कलाओ का जन्म ही धर्म की सीमाओ में हुआ है और हर जगह पर धर्म ने कला के माध्यम से ही अपनी धार्मिक मान्यताओ को लोगो तक पहुंचाया है। इसी प्रकार भारतीय कला का तीन–चार हजार वर्षो से धर्म से घनिष्ट संबंध बना हुआ है। अतः भारतीय कला में धार्मिक भावनाऐ रच बस गई है। मनुष्य के स्वभाव या अन्तःकरण को गहराई से तथा पूर्णता से दिखाने का अत्यधिक महत्व है। अन्तःकरण की भावनाओ के सादर्श प्रदर्शन को भारतीय कला में सर्वोपरि महत्व दिया गया है। रंग हमारी धार्मिक भावनाओ को भी दर्शाते है, जिस प्रकार गोदने का आरंभ रंगो के माध्यम से शारीरिक अंलकरण के उद्देश्य से ही नही, अपितु धार्मिक अभिप्रायो के उद्देश्य से भी हुआ प्रतीत होता है, जो उन जनजातियों की आन्तरिक व धार्मिक भावनाओ को स्पष्ट करता है। सुबह सुबह जब सूर्य निकलता है तो उसकी किरणो का रंग केसरिया होता है या जिसे भगवा, गेरूवा या नारंगी रंग भी कहते है। यही दिखने के लिऐ हम गेरूवा रंग पहनते है कि हमारे जीवन में एक नया सवेरा हो गया है।

आध्यात्मिक :–धार्मिक और पौराणिक संघो में आध्यात्मिक या जादुई विश्वास के साथ जुडे है रंग। अन्तःकरण की आध्यात्मिकता का औचित्य सदैव नारी के आन्तरिक सौन्दर्यानुभूति से जोडा जाता है। कोई भी मानव मंदिर में भगवान को संपूर्ण श्रृंगार, आभूषण, रंगो से युक्त देखना चाहते है। '' प्राचीन संस्कृति के विद्वानो की मान्यता है कि गोदने की प्रथा अत्यंत प्राचीन है, उनका विश्वास है कि गोदने से एक स्थायी और आलौकिक श्रृंगार है, जो बाल्यकाल से मृत्यु पर्यन्त साथ रहते है और मरने के बाद आत्मा के साथ परलोक चले जाते है। '' 3 यह भी विश्वास है कि गोदे हुए चिन्ह रंगो के माध्यम से शरीर में स्थायी हो जाते है।

संस्कृति :–रंगो का संस्कृति और सभ्यता से गहरा संबंध है। रंग संस्कृति में नवीनता प्रतिस्फुटित (उत्पन्न) करते है। रंगो के द्वारा ही कला की सरल और मार्मिक अभिव्यक्ति होती है। रंग संस्कृति मानव जीवन स्तर और कलाओ की प्रगति का प्रेरणा स्त्रोत है। कई रंग अलंकरण समूची जाति और संस्कृति के परिचायक होते है, जिस प्रकार बैगा जनजाति में गोदना से जातीय परम्परा और संस्कृति के चिन्ह अंकित होते है। अंतःकरण जहां मानव के संस्कारो की व्याख्या करते है, वही मानव को रंग संस्कृति के सौन्दर्य से संस्कारित करते है। विभिन्न संस्कृति और परिवेशो के अनुरूप रंगो की विशेष पहचान होती है।

सामाजिक :–सामाजिक परिपेक्ष्य में रंग सौन्दर्य और सौन्दर्य से उत्प्रेरित कलाओ का विशिष्ट क्षेत्र है। हर मनुष्य किसी न किसी रंग में रंगा है। भिन्न भिन्न जातियों या समूहो में सृष्टि की विस्तिर्णता को एक साथ जीवन्त कर भिन्न भिन्न रंगो में रंग कला के स्वरूप को व्यक्त कर देते है, जिनमें दैवीय स्वरूप, मानवीय स्वरूप के जीवन चित्रण हमारे अक्षपटल के समक्ष आ जाते है, जिस प्रकार बैगा जनजाति से गोदना आकृतियों का अपना एक सामाजिक और धार्मिक महत्व होता है। '' गोदना बनाते समय सुई के माध्यम से शरीर में छेद कर आकृतियॉ बनाई जाती है। इसके बाद उसमें रंगो के चूर्ण व कई प्रकार के प्राकृतिक रंगो

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

को भरा जाता है । '' 4 जिससे ये आकृतियॉ शरीर में स्थायी रूप से रह जाती है। '' गोदना की उत्पत्ति कैसे हुई, इस बारे में समाज शास्त्रियों का मत अलग अलग है। प्रख्यात समाज शास्त्री एस.न्यूबर्ग के अनुसार इसकी उत्पत्ति चिकित्सा के लिऐ हुई होगी। '' 5

प्राचीन :–कला और संस्कृति के निर्माण में रंगो का प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक सौन्दर्यवृद्वि एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति में भी सदैव योगदान रहा है। रंगो के माध्यम से ही प्रकृति की हरियाली से लेकर सूरज की सुनहरी रोशनी, आसमान का नीलापन, बादलो की काली घटाऐ और चन्द्रमा का उजालापन देख पाते है। बादलो में खिंचती सात रंगो की इन्द्रधनुषी रेखा प्रत्येक रंग की सुन्दर कहानी बयां करती है। रंगो का जन्म कब, कहां और कैसे हुआ, इसकी जिज्ञासा हमेशा से बनी रही है। क्या कहता है इतिहास ? :–'' ऐसा माना जाता है कि रंगो का जन्म लगभग 2000 ईसा. पूर्व हुआ। धीरे धीरे रंगो की छटा पूरे विश्व में फैल गयी। भारत में प्रारंभिक काल में ही रंगो का विशेष महत्व रहा है। मोहन–जोदोडो एवं हडप्पा की खुदाई में सिंधु घाटी सभ्यता में बर्तन एवं मूर्तियॉ पाई गई। साथ ही लाल रंग का कपडा भी मिला। इतिहास के जानकारो के मुताबिक इस पर मजीठ या मजीष्ठा की जड से तैयार किया गया रंग चढा हुआ था। '' 6 पूर्व में हजारो वर्ष तक मजीठ की जड और बक्कम वृक्ष की छाल लाल रंग के स्त्रोत थे। पीपल, गूलर और पाकड जैसे वृक्षो पर लगाने वाली लाख कृमियों की लाह से महाउर रंग तैयार किया जाता था। पीले रंग और सिन्दूर हल्दी से प्राप्त होते थे।

वर्तमान :–रंग सौन्दर्य और अलंकार का एक अंग मात्र है। रंग सौन्दर्य और सौन्दर्य से उत्प्रेरित कलाओ का विशिष्ट क्षेत्र है। रंग अपने आप में सौन्दर्य आकर्षण होने के साथ साथ अन्तरंग, बाह्यरंग पक्ष को भी स्थूल दृष्टि प्रदान करते है। ईश्वर या प्रकृति ने मनुष्य को जैसा बनाया है, उसे वैसी काया दी है, वह उसमें अपने को सुन्दर और पूर्ण बनाने हेतु देह को अलंकृत कर अथवा रंगो व आभूषणो से सुसज्जित कर ही वह मान पाता है कि वह सुन्दर व आकर्षक है। संपूर्ण विश्व में गोदना शारीरिक अलंकरण के रूप में प्रचलित है। आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रो में ही नही, अब शहरी परिपेक्ष्य में भी गोदना अलंकरण के रूप में उतना ही प्रचलित है। पूर्व में गोदना अलंकरण, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से गुदवाते थे, परन्तु आज युवाओ में गोदना एक फैशन आईकन (चिन्ह) बन चुका है। अलग अलग रंगो के माध्यम से युवा अपने अंगो पर गोदना (जिसे आज की भाषा में '' टैटू '' कहते है) बनवाते है। ''विशेष बात यह है कि, कपड़ो आदि में गोदना की आकृतियॉ बनाने के लिऐ वर्तमान में प्राकृतिक रंगो का ही अधिक उपयोग हो रहा है।''7

निष्कर्ष :–प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक रंग मनुष्य की सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहे है। जब मानव ने जन्म लिया तो उसने स्वयं को प्रकृति की गोद में पाया व सृष्टि के रंगीन स्वरूप के दर्शन किऐ। रंगो के सौन्दर्य को पाश्चात्य जगत में लौकिक एवं अलौकिक दोनो रूपो में देखा है और पूर्वी जगत में उसे विशुद्व आध्यात्मिक तल में केन्द्रित पाया है। जिस प्रकार गोदना देह को अलंकृत करने की इच्छा का पहला यंत्र है और अलंकरण के साथ उनकी मान्यता आत्मा के साथ जुडे उनके आदिम विश्वास में है। सृजनात्मक प्रवृत्ति भले ही माध्यमो के रूप में भिन्न भिन्न क्यों न हो, लेकिन रंग हमेशा मानव के प्रेरणा स्त्रोत रहे है। जैसे शिवत्व को पाने के लिऐ सत्य की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति ही आतंरिक व बाह्य रंगो के संयोजन की कला है।

संदर्भ ग्रन्थो की सूची

1 *अंगराग, आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, म.प्र.संस्कृति परिषद भोपाल, पृष्ठ क्रमांक 2*
2 *अंगराग, आदिवासी लोककला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, म.प्र.संस्कृति परिषद, भोपाल, पृष्ठ क्रमांक 8*
3 *अंगराग, आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल, पृष्ठ क्रमांक 12*
4 *सतह से शिखर की ओर चला '' गोदना कला '', मेट्रिक्स न्यूज, 8 मार्च 2013, समाचार क्रमांक 1*
5 *नवभारत टाईम्स, 18 फरवरी 2012, रिडर ब्लॉग. इंडिया टाईम्स. कॉम*
6 *ओशो वर्ल्ड ऑनलाईन पत्रिका, मार्च 2013, ओशो वर्ल्ड. कॉम.*
7 *मैट्रिक्स न्यूज, मार्च 2013, मैट्रिक्स न्यूज. कॉम*